		अप्रार्थी द
21-6-18	पत्रावली न्याय आपके द्वार-2018 में अटल सेवा केन्द्र ढीबरा पेश हुई। पक्षकारान उपस्थित है। मूलवाद सहमति के आधार पर निर्णीत हो चुका है इसलिये T.I. प्रा० पत्र का कोई औचित्य नहीं रह गया है अतः मूलवाद के परिपेक्ष में T.I. प्रा० पत्र भी निर्णित किया गया। पत्रावली फैसल शुमार होकर दर्ज नम्बर के नाम हो। आदेश खुले आम में सुनाया गया।	प्रार्थी सा द
	उपखण्ड अधिकारी सामरतेक	निशानी

Scanned by CamScanner